



पाठ – बाईस

हम सब मनुष्य हैं

वर्ण-व्यवस्था, वैश्य, शूद्र, कर्म, निर्धारण, गौण, शामिल, उदय, कटघरा, भावना, छुआछूत, अलगाववाद, दीवार, पिछड़ेपन, रोड़ा, उन्नति, स्वार्थ, हानि।

पुराने काल में भारत में वर्ण-व्यवस्था प्रचलित थी। मनुष्यों को चार वर्णों में बाँटा गया था — ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। वर्णों का आधार कर्म था। व्यक्ति का वर्ण उसके कर्म के आधार पर निर्धारित होता था। ब्राह्मण का पुत्र कभी-कभी शूद्र जैसे कार्य करता था। उसे शूद्र वर्ण में गिना जाता था। शूद्र का पुत्र क्षत्रिय जैसे कर्म करता था। उसे क्षत्रिय वर्ण का माना जाता था। यही बात अन्य सब वर्णों के लिए भी सही थी।

कुछ काल बाद यह व्यवस्था बदल गई। अब वर्ण का निर्धारण कर्म के आधार पर न होकर जन्म के आधार पर होने लगा। जन्म मुख्य हो गया और कर्म गौण। ब्राह्मण का पुत्र अज्ञानी होने पर भी ब्राह्मण ही माना जाने लगा। शूद्र का पुत्र विद्वान होकर भी ब्राह्मण वर्ण में शामिल होने योग्य नहीं माना गया। इसी तरह क्षत्रिय का पुत्र क्षत्रिय और वैश्य का पुत्र वैश्य कहा जाने लगा। इससे जाति-प्रथा का उदय हुआ। इन जातियों के अन्दर अनेक उप-जातियाँ बन गईं। लोग अपनी-अपनी जातियों और उप-जातियों के कटघरे में बन्द हो गए। वे दूसरी जातियों से दूरी बनाए रखने में ही शान समझने लगे। इससे जातिवाद की भावना ने जन्म लिया।



जातिवाद भारत के समाज की सबसे बड़ी बुराइयों में से एक है। इसने मनुष्य और मनुष्य के बीच भेदभाव, ऊँचनीच, छुआछूत, अलगाववाद और शत्रुता की दीवार खड़ी कर दी है। आए दिन

जातिवादी संघर्ष देखने को मिलते हैं। जातिवाद समाज के पिछड़ेपन का एक गंभीर कारण है। यह सामाजिक और राष्ट्रीय एकता के मार्ग का रोड़ा है।



हम सब मनुष्य हैं। मनुष्यों के केवल दो वर्ग हैं — अच्छे मनुष्य और बुरे मनुष्य। अपनी उन्नति के साथ-साथ समाज की भलाई करने वाले अच्छे मनुष्य कहलाते हैं। अपने स्वार्थ के लिए समाज की हानि पहुँचाने वाले बुरे मनुष्य कहलाते हैं।

हम सोचें, हमें अच्छा मनुष्य बनना है या बुरा !

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थों को समझो :—

आधार	=	सहारा, आश्रय, अवलम्ब।
निर्धारित	=	निश्चित, ठहराया हुआ।
प्रचलित	=	व्यवहार में आया हुआ।
गौण	=	साधारण, अमुख्य, अप्रधान।

शामिल	=	सम्मिलित, संयुक्त।
उदय	=	प्रकट होना, निकलना।
कटघरा	=	बड़ा पिंजरा।
दीवार	=	मिट्टी, ईंट आदि का बना हुआ घेरा।
रोड़ा	=	बाधा।
स्वार्थ	=	अपना प्रयोजन, अपना लाभ।

2. उत्तर दो :—

- (क) पुराने काल में भारत में कौन-सी व्यवस्था प्रचलित थी ?
- (ख) चार वर्ण कौन-कौन से थे ?
- (ग) वर्ण निर्धारण का आधार क्या था ?
- (घ) कुछ काल बाद वर्ण का निर्धारण किस आधार पर होने लगा ?
- (ङ) जाति-प्रथा का उदय कैसे हुआ ?
- (च) लोग किसमें बन्द हो गए ?
- (छ) वे किसमें अपनी शान समझने लगे ?
- (ज) भारत के समाज की सब से बड़ी बुराइयों में से एक कौन-सी है ?
- (झ) जातिवाद ने कहाँ और किस की दीवार खड़ी कर दी है ?
- (ञ) जातिवाद किसके मार्ग का रोड़ा है ?
- (ट) अच्छे मनुष्य कौन हैं ?
- (ठ) बुरे मनुष्य की क्या पहचान है ?
- (ड) मनुष्य और जानवर में क्या अन्तर है ?
- (ढ) तुम और तुम्हारे दोस्त में क्या अन्तर है ?
- (ध) मनुष्य का सबसे बड़ा धन क्या है ?

3. वाक्य बनाओ :—

व्यवस्था -----

प्रचलित -----

आधार -----

शामिल -----

उदय -----

कटघरा -----

जातिवाद -----

संघर्ष -----

दीवार -----

4. तालिका को ध्यान से देखो, पढ़ो तथा खण्ड 'क' और 'ख' के वाक्यांशों को सही ढंग से जोड़ कर लिखो :—

क	ख
(अ) कुछ काल बाद	(अ) और कर्म गौण ।
(आ) अब वर्ण का निर्धारण कर्म के आधार पर	(आ) वैश्य का पुत्र वैश्य कहा जाने लगा ।
(इ) जन्म मुख्य हो गया	(इ) यह व्यवस्था बदल गई ।
(ई) ब्राह्मण का पुत्र अज्ञानी होकर भी	(ई) ब्राह्मण वर्ण में शामिल होने योग्य नहीं माना गया ।
(उ) शूद्र का पुत्र विद्वान होकर भी	(उ) ब्राह्मण ही माना जाने लगा ।
(ऊ) इसी तरह क्षत्रिय का पुत्र क्षत्रिय और	(ऊ) न होकर जन्म के आधार पर होने लगा ।

(अ) -----

(आ) -----

(इ) -----

(ई) -----

(उ) -----

5. सही कथन के आगे (✓) का निशान और गलत कथन के आगे (x) का निशान लगाओ:—

- (क) जातिवाद भारत के समाज की सब से बड़ी अच्छाइयों में से एक है। ☐
- (ख) यह मनुष्य और मनुष्य के बीच भेद-भाव और शत्रुता की दीवार खड़ी कर देती है। ☐
- (ग) आए दिन जातिवादी संघर्ष देखने को मिलते हैं। ☐
- (घ) जातिवाद समाज के पिछड़ेपन का एक गंभीर कारण है। ☐
- (ङ) यह सामाजिक और राष्ट्रीय एकता का वरदान है। ☐

6. निम्नलिखित शब्दों के लिंग पहचानो और याद करो :—

काल	—	पुल्लिंग	जाति	—	स्त्रीलिंग
व्यवस्था	—	स्त्रीलिंग	समाज	—	पुल्लिंग
व्यक्ति	—	पुल्लिंग	दीवार	—	स्त्रीलिंग
पुत्र	—	पुल्लिंग	मनुष्य	—	पुल्लिंग
उन्नति	—	स्त्रीलिंग	भावना	—	स्त्रीलिंग